



जवाहर कृषि संदेश



वर्ष : 6 अंक : 11 & 12 कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

अप्रैल - सितम्बर 2014



विशेष कृषि संदेश ...

हमारे देश में सब्जियों की कम उत्पादकता एवं निम्न गुणवत्ता का मुख्य कारण उनकी खेती का लगभग शतप्रतिशत खुले वातावरण में किया जाना है। तथा दूसरा कृषकों द्वारा सब्जी उत्पादन में अभी भी परम्परागत विधियों तथा तकनीकों का अपनाया जाना है। खुले वातावरण में सब्जी का उत्पादन करने से अनेकों प्रकार के कीड़े-मकोड़ों, विभिन्न प्रकार के जीवाणु, विषाणु, कवक एवं सूत्र कृमि आदि कारकों द्वारा सब्जी तथा अन्य फसलों को भारी नुकसान पहुँचाया जाता है। ठीक इसी प्रकार तापमान, प्रकाश एवं आर्द्रता की कमी एवं अधिकता के कारण भी फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इन सभी कारकों से बचाव हेतु गुणवत्ता युक्त व अधिक उत्पादन लेने हेतु संरक्षित खेती अपनाना लाभ दायक व अति आवश्यक है।

संरक्षित खेती:

“जब हम किसी फसल का उत्पादन मुख्य जैविक या अजैविक कारकों से बचाते हुए (सुरक्षा प्रदान करते हुए) करते हैं तो उसे संरक्षित खेती कहते हैं”

फसलों की संरक्षित खेती के मुख्य लाभ:

- मुख्य जिवित व अजिवित कारकों से फसल की सुरक्षा
- उच्च उत्पादकता (सामान्यतः खुले खेत से) 5-10 गुना अधिक
- खुले वातावरण की अपेक्षा संरक्षित खेती से उच्च गुणवत्ता प्राप्त करना सम्भव
- लम्बी अवधि तक सब्जियों की लगातार उपलब्धता
- अधिक लाभ के लिए वे मौसमी फसल उत्पादन की पूर्ण सम्भवा
- प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल व भूमि आदि का समुचित सदुपयोग
- सुरक्षित सब्जी उत्पादन करना सम्भव
- कम क्षेत्रफल में अधिक लाभ लिया जाना सम्भव
- खुले खेत की अपेक्षा 5-6 गुणा रोजगार सृजन की सम्भावना
- परि नगरीय क्षेत्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी प्रौद्योगिकी



सफल प्रयास ...

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा “मुख्यमंत्री खेत तीर्थ योजना” के अन्तर्गत हाईटेक हार्टिक्रचर, सब्जी एवं फल कैफैटेरिया, फसल कैफैटेरिया, वर्मी कम्पोस्ट ईकाई, पोली हाऊस में कियान प्रजाति का खीरा उत्पादन, उच्च सघनता पौध रोपण, पशुओं के लिए पौष्टिक चारा के रूप में एजोला उत्पादन, पोली मल्टच तकनीक से सब्जी उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, रोग नियंत्रण, गुणवत्ता युक्त ड्रिप सिंचाई पद्धति से खरीफमौसम की सब्जी जैसे- मिर्च, टमाटर, बैंगन, गिल्ली, करेला, लौकी, खरबूजा, भिण्डी, पलासबीन रबी मौसम में मिर्च, टमाटर, बैंगन, पालक, गोभी, मेंथी, प्याज, स्वीटकार्ना आदि सब्जियों को प्रदर्शन ईकाई के रूप में स्थापित किया गया है। जिसके भ्रमण हेतु मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान व अन्य प्रदेशों से लगभग 6500 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने इन प्रदर्शित माडलों का अवलोकन कर इसे अपनाने की बात कही। साथ ही इस तकनीक के फैलाव हेतु सभी विकास खण्डों में इस तरह के मांडल का प्रदर्शन किसानों के प्रक्षेत्र पर किये गये ताकी उस क्षेत्र के किसान इन तकनीकों के माध्यम से सब्जी की खेती में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकें और सब्जी की उत्पादकता में बढ़ोतरी हो सके।



उपलब्धियाँ

कृषक प्रक्षेत्र प्रदर्शन

- युकेलिप्टस आधारित एग्री सिल्वी कल्चर पद्धति से हल्दी प्रजाति रोमा का प्रदर्शन पांच कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे 30.6 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी प्राप्त हुई।
- मृदा रहित प्रो-ट्रे नर्सरी पद्धति से टमाटर उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 71.00 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी प्राप्त हुई।
- प्लास्टिक मलच तकनीक से टमाटर उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन पांच कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे फसल उत्पादन में 35.86 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- खरीफ़ियाज की उन्नत प्रजाति एग्री 'फाउण्ड डार्क रेड' का प्रदर्शन पांच कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 27.65 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- नवीन तकनीकी ज्ञान को गांव में ही उपलब्ध कराने के उद्देश्य से तीन गांवों में "ग्रामीण पुस्तकालय" का सुभारम्भ प्रदर्शन के रूप में किया गया जिसमें कृषि पत्रिका, बुकलेट, न्यूजलेटर व कृषि तकनीक आधारित पुस्तकों का संग्रह किया गया। कुल 150 कृषक परिवारों ने ग्रामीण पुस्तकालय की सदस्यता ग्रहण कर कृषि की उन्नत तकनीकी का ज्ञान अर्जित किया।
- धान से अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु बोनी पूर्व खेत में हरी खाद का उपयोग कर धान की उन्नत प्रजाति दन्तेश्वरी का प्रदर्शन कृषक प्रक्षेत्र पर किया गया। जिससे उत्पादन में 14 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी प्राप्त हुई।
- अरहर की उन्नत प्रजाति टी.जे.टी.-501 का प्रदर्शन 5 हे. क्षेत्रफल में कुल 16 किसानों के खेतों पर किया गया जिससे उत्पादन में 25.72 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- सोयाबीन की प्रजाति "जे.एस.-2029" का प्रदर्शन परीक्षण के परिणामों को देखते हुए कृषक प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे फसल उत्पादन में 28.04 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।



वृक्ष लगाए - पर्यावरण बचाएं

प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2014		जुलाई - सितम्बर 2014	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
फसल उत्पादन	01	20	08	160
उद्यानिकी	03	64	02	42
कृषि वानिकी	—	—	01	20
कृषि में महिलाओं की भागीदारी	03	61	03	60
कृषि विस्तार	06	124	03	63
पौध रोग विज्ञान	01	20	01	22
मृदा विज्ञान	03	60	05	102
पशुपालन	01	24	04	80
अभियांत्रिकी	02	40	—	—

ग्रामीण युवाओं हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2014		जुलाई - सितम्बर 2014	
	संख्या	अवधि	संख्या	अवधि
मशरूम उत्पादन तकनीक	—	—	01	05
फल एवं सब्जी परिरक्षण	—	—	01	05

सेवा कालीन प्रसार कार्यकर्ता प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2014		जुलाई - सितम्बर 2014	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
कूड़-मेढ़ पद्धति से मध्यम अवधि की अरहर की बोनी	—	—	01	25

अन्य विस्तार गतिविधियां

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2014		जुलाई - सितम्बर 2014	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
किसान संगोष्ठी	06	240	10	664
किसान वैज्ञानिक परिसंवाद समूह चर्चा	01	180	—	—
वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र भ्रमण	05	83	03	66
केन्द्र पर किसानों का भ्रमण	24	530	26	760
फिल्म सीडी शो	18	460	86	2660
एक्सपोजर विजिट	20	385	26	418
आकाशवाणी वार्ता	05	160	03	152
कृषि प्रदर्शनी	02	समूह	01	समूह
गांव का सर्वे	—	—	02	समूह
साहित्य प्रकाशन	—	—	06	218
प्रक्षेत्र सलाह सेवा	02	समूह	02	समूह
प्रक्षेत्र सलाह सेवा	12	175	08	136
निदानात्मक सर्वे भ्रमण	07	160	06	153
प्रक्षेत्र दिवस	01	146	02	360

उपलब्धियाँ

उप महानिदेश, डॉ. ए.के. सिक्का द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का अवलोकन: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेश (कृषि प्रसार एवं एन.आर.एम.) डॉ. ए.के. सिक्का द्वारा दिनांक 21.4.2014 को कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा स्थापित फल-सब्जी कैफेटेरिया, वर्मी कम्पोस्ट इकाई, किसान कार्नर एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर संचालक अनुसंधान सेवायें, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय डॉ. एस.एस. तोमर, जोनल परियोजना संचालक डॉ. अनुपम मिश्रा, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. पी.के. मिश्रा सहित अन्य अतिथियों ने कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा की जा रहे कार्यों की सराहना की।



उद्यानिकी आयुक्त डॉ. एस.के. मलहोत्रा द्वारा केन्द्र का भ्रमण:

संचालनालय कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के उद्यानिकी आयुक्त डॉ. एस.के. मलहोत्रा तथा मध्यप्रदेश शासन भोपाल के उद्यानिकी आयुक्त श्री अनुराग श्रीवास्तव द्वारा दिनांक 12.8.2014 को कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा प्रदर्शित फल-सब्जी कैफेटेरिया, पोली मलच से उन्नत खेती, पोली हाउस में संरक्षित खेती के अतिरिक्त फसल कैफेटेरिया, वर्मीकम्पोस्ट इकाई आदि का अवलोकन किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर के सभागार में कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ परि संवाद स्थापित करते हुए उद्यानिकी फसलों के उन्नत तकनीकों को प्रभावी तरीके से किसानों तक पहुंचाने की बात कही।



माननीय कुलपति जी द्वारा मुख्यमंत्री खेत तीर्थ का भ्रमण:

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा स्थापित "मुख्यमंत्री खेत तीर्थ" के अन्तर्गत उन्नत तकनीकों के प्रदर्शन हेतु फसल कैफेटेरिया, फल-फूल व सब्जी कैफेटेरिया व वर्मी कम्पोस्ट इकाई का अवलोकन जवाहरलाल नेहरू

कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. व्ही.एस. तोमर, अधिष्ठाता, कृषि संकाय डॉ. एस.के. राव, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. पी.के. मिश्रा व अन्य द्वारा किया गया।



फल सब्जी परिरक्षण पर व्यवसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार एवं महिला शशक्तिकरण हेतु फल सब्जी परिरक्षण विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें मौसमी फल एवं सब्जियों को संसाधित कर अचार, मुरब्बा, कैण्डी, जैम, जैली, मिक्स सब्जियों का अचार, टमाटर सास आदि उत्पादों को बनाने के गुर सिखाये गये।



आदिवासी कृषक/कृषक महिलाओं के जीवन यापन हेतु मुर्गी पालन व्यवसाय

कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर द्वारा आदिवासी बहुल क्षेत्र कुण्डम में मुर्गी पालन व्यवसाय के माध्यम से लोगों के जीवनयापन सुरक्षा हेतु 500 चूजों व पोषक आहार का वितरण आदिवासी कृषक / कृषक महिलाओं को किया गया। जिससे 300 से 500 रुपये प्रति मुर्गे की दर से उन्हें अतिरिक्त आय की प्राप्ति हुई।



वृक्ष बचाएं - जीवन पाएं

सामयिक कृषि संदेश

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

- सिंचित अवस्था में चने की बुआई अक्टूबर माह के अंत तक किसान भाई कर दें, बीज जनित रोगों के रोकथाम हेतु व्युटावेक्स 1 ग्राम व ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति किलो की दर से बीज को उपचारित करें।
- दलहनी फसलों की बुवाई के लिए बीज को राइजोबियम, पी.एस.बी. कल्चर से टीकाकरण हेतु 5 ग्राम कल्चर/किलो बीज की दर से उपयोग में लायें। कल्चर से टीकाकरण के पूर्व बीज को फफूँद नाशक दवाओं से उपचारित करें।
- बरानी क्षेत्र में चना व सरसों की बुआई 15 अक्टूबर तक एवं सिंचित क्षेत्र में इस माह के अंत तक पूर्ण कर लें।
- मध्य अक्टूबर के बाद किसान भाई गेहूँ की देशी प्रजातियों की बोनी असिंचित तथा हवेली दशाओं में करें।
- प्याज, टमाटर, बैंगन, फूल एवं पत्तागोभी उत्पादन हेतु (नर्सरी) पौध रोपणी तैयार करें। रोपणी हेतु उथली क्यारियाँ बना कर बीज को वाविस्टिन व मेंकोजेब से उपचारित कर तैयार क्यारियों में कतारों में बोनी करें।
- पशुओं के लिये हरा चारा बारसीम, रिजका (लूसर्न) जई आदि कि बुआई करें।

नवम्बर माह के कृषि कार्य

- गेहूँ की सिंचित क्षेत्रों में अधिक उत्पादन देने वाली प्रजातियों (जी.डब्ल्यू-273, एम.पी. 1142) की बोनी करें।
- गेहूँ की बोनी के 25 से 30 दिनों के बाद निंदाई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु 2, 4-डी, दवा का (500-700 ग्राम/हे.) छिड़काव करें।
- जो किसान भाई बसन्त काल में बैंगन लगाना चाहते हैं, वे फसल की रोपाई करें।
- बरसीम, जई आदि फसलों की सिंचाई करें, जई में पहली सिंचाई बोनी के 20-25 दिन पर करें तथा सिंचाई के बाद नत्रजन उर्वरक का उपयोग करें।

दिसम्बर माह के कृषि कार्य

- मटर के बाद खाली खेतों में गेहूँ की पछेती किस्म लोक-1 की बुवाई इस माह के अंतिम पखवाड़े तक कर दें।
- फसलों को पाले से बचाने हेतु सिंचाई करें तथा रात के समय खेत में धुँआ करें।
- गेहूँ की खड़ी फसल में सिफारिश के अनुसार नत्रजन उर्वरक दें प्रथम सिंचाई शीर्ष जड़े (क्राउन रूट) विकसित होने की अवस्था, बोनी के 20 से 25 दिनों में करें एवं दूसरी सिंचाई कल्ले निकलने की अवस्था में 40 से 45 दिनों में करें। नत्रजन उर्वरक की 1/3 मात्रा खड़ी फसल में सिंचाई के बाद छिड़ककर बीजाना लाभप्रद होगा।

- चना में फली छेदक कीट के प्रकोप को कम करने के लिए क्लोरोपाइरीफास दवा के छिड़काव (2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर) फूल आने से पहले फलियों में दाना भरते समय करें।
- टमाटर की गर्मी की फसल हेतु नर्सरी तैयार करें।
- लाख वाले वृक्षों की शाखाओं पर तैयार हुई लाख को अलग करने के लिए तैयार शाखाओं को काटे व खुरचकर लाख एकत्रित करें। नई विकास कोमल शाखाओं पर पुनः लाख कीट (बीहन) को चढ़ाएँ।
- पशुओं को सर्दी से बचाने के लिये धान का पुवाल बिछाएँ पशुओं के ऊपर बोरी बांधें तथा पर्दा लगायें।

अन्य गतिविधियाँ



प्रति

बुक-पोस्ट

Fontane Graphics © 2412326

प्रकाशक : डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक
 संकलन एवं संपादन : डॉ. दिनेश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि विस्तार)
 संपादन सहयोग : डॉ. एस.बी. अग्रवाल, वाय.एम. शर्मा, डॉ. शशि गौर
 डॉ. बी.पी. बिसेन, डी.पी. सिंह, श्रीमती जीजी ऐनी अब्राहम